

नुक्कड़ नाटक

विधा परिचय : एक विशिष्ट नाट्यशैली के रूप में 'नुक्कड़ नाटक' आज अपनी पहचान बना रहा है। यह एक ऐसी धारदार विधा है जो राजनीति, समाज और साहित्य में संतुलन बनाए रखती है। वास्तव में यह एक सांस्कृतिक हथियार है जो जड़ मानसिकता को तोड़कर लोकशक्तियों की पहचान कराता है। सामान्य व्यक्ति की समस्याओं को जनसाधारण की भाषा में सहजता और सरलता के साथ लोगों तक पहुँचाना इसका प्रमुख उद्देश्य है।

'नुक्कड़' से तात्पर्य है चौक या चौराहा। नुक्कड़ नाटक का प्रस्तुतीकरण सड़क के किनारे, किसी चौक, किसी मैदान, बस्ती, हाउसिंग सोसाइटी के आँगन में कहीं भी हो सकता है। नुक्कड़ नाटक हमारे सामने एक आंदोलन के रूप में उभरकर आया है। ये नाटक सामाजिक विसंगतियों, विडंबनाओं, रूढ़ियों, शोषण, सत्ता के स्वरूप और आम जनता के संघर्ष को सहजता के साथ सीधे जनता तक पहुँचाते हैं। इस प्रकार यह नाट्यरूप हमारे सामने जनसंघर्षों तथा आंदोलनों का एक सबल हथियार बनकर आया है। आज के जीवन की त्रासदी को झेलते हुए और संघर्ष के बीच से गुजरते हुए तथा वहीं से विषय चुनकर नुक्कड़ नाटक और उसका रूप तथा कथ्य जन्म लेते हैं।

'नुक्कड़ नाटक' मूलतः आठवें दशक से लोकप्रिय हुआ। नुक्कड़ नाटक को अंग्रेजी में 'स्ट्रीट प्ले' (Street Play) के नाम से जाना जाता है। आम तौर पर इसको उसी रूप में प्रस्तुत किया जाता है जैसे सड़क पर मदारी अपना खेल दिखाने के लिए भीड़ जुटाते हैं। नाट्य प्रस्तुति का यह रूप जनता से सीधे संवाद स्थापित करने में मदद करता है। नुक्कड़ नाटक आम तौर पर बेहद सटीक और संक्षिप्त होते हैं क्योंकि सड़क के किनारे स्वयं रुककर नाटक देखने वाले दर्शकों को अधिक समय तक रोके रखना संभव नहीं होता। विख्यात रंगकर्मी स्वर्गीय सफदर हाशमी ने नुक्कड़ नाटकों को देशव्यापी पहचान दिलाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका जन्मदिवस १२ अप्रैल को नुक्कड़ नाटक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

नुक्कड़ नाटक में न तो अंक परिवर्तन होता है न ही दृश्य परिवर्तन। वेशभूषा भी बार-बार नहीं बदली जा सकती और न ही नाटक को इतना लंबा किया जा सकता है कि सड़क या चौराहे पर खड़े या बैठे दर्शकों के लिए घंटों रुकना मुश्किल हो जाए। इसलिए नुक्कड़ नाटक लंबे या दीर्घ नहीं होते। मूलतः मंचीय नाटक के लिए परदा, साज-सज्जा, नेपथ्य, ध्वनि संयोजन, महंगा मंचसेट आदि के साथ इमारत के अंदर सभागार आवश्यक होता है परंतु नुक्कड़ नाटक खुली जगह में बिना किसी साज-सज्जा के ही खेले जाते हैं। नुक्कड़ नाटक में नाट्य मंडली और दर्शकों में कोई दूरी नहीं होती, बल्कि सारे अभिनेता दर्शक समुदाय के बीच गोलाकार रंगस्थल बनाकर अपना नुक्कड़ नाटक खेलते हैं।

हिंदी नाटक साहित्य में नुक्कड़ नाटक प्रमुख रूप से लिखने वाले नाटककार और उनके नाटक इस प्रकार हैं - सफदर हाशमी, गुरुशरण सिंह, नरेंद्र मोहन, शिवराम, ब्रजमोहन, सुरेश वसिष्ठ, असगर वजाहत, राजेश कुमार आदि। नुक्कड़ नाटक समाज परिवर्तन हेतु सकारात्मक उद्देश्य को केंद्र में रखकर निरंतर प्रदर्शित करने वाली अनेक नाट्य संस्थाएँ कार्यरत हैं।

भारतीय जनजीवन के लिए आठवाँ दशक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से विभिन्न समस्याओं से भरा था। बेरोजगारी, अशिक्षा, असुरक्षा, नैतिक मूल्यों का पतन, गलत रूढ़ियाँ, महंगाई, भ्रष्टाचार, मौलिक अधिकारों का हनन, किसान-मजदूरों का शोषण आदि समस्याओं ने अकराल-विकराल रूप धारण किया

था। ऐसी विकट समस्याओं से जुझने के लिए और लोगों को संगठित करके परिवर्तन लाने का कार्य नुक्कड़ नाटक ने किया। समाज परिवर्तन, सामाजिक एकता, शोषणमुक्त समाज, स्त्री-पुरुष समानता, सर्वधर्म समभाव, राष्ट्रभक्ति, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, पर्यावरण संवर्धन, जल साक्षरता आदि विषयों के बारे में लोगों में चेतना जगाने में नुक्कड़ नाटक ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज नुक्कड़ नाटकों के विषय व्यापक होने लगे हैं। इन विषयों में घर से लेकर मोहल्ले, शहर-गाँव, महानगर के ज्वलंत प्रश्न तक आने लगे हैं। प्रशासन भी कई महत्वपूर्ण सामाजिक संदेशों के प्रसारण के लिए नुक्कड़ नाटकों से सहायता लेता है। जल की समस्या, रक्तदान को बढ़ावा देना, प्लास्टिक बंदी, प्रौढ़ साक्षरता, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ आदि सामाजिक सरोकार बनाए रखने वाले प्रेरणाप्रद विषयों पर नुक्कड़ नाटक जनहितार्थ प्रस्तुत किए जाते हैं। जन-जन तक अपनी बात सहजता से पहुँचाना इसका मुख्य उद्देश्य है।

व्यक्ति को जब भीतर से किसी बात की चुभन अनुभव होती है तभी वह भीतर से बदलने को तैयार होता है। कथ्य के स्तर पर जहाँ वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं से नुक्कड़ नाटक सीधे जुड़ा हुआ है वहीं तकनीक के स्तर पर अपनी कुछ खास खूबियों को साथ लिये हुए हैं। पारंपरिक मंचीय नाटकों के विपरीत तथा मंच और दर्शकों के बीच की दूरी पाटते हुए जनता से सीधे साक्षात्कार करना और तामझाम से उत्पन्न भ्रम को तोड़कर आम जीवन से सीधे जुड़ना जैसे तत्त्व नुक्कड़ नाटकों के विकास में पोषक रहे हैं।

भारत में नुक्कड़ नाटकों की शुरुआत सामाजिक आवश्यकता के रूप में हुई है। सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता को देखते हुए अनिष्ट रूढ़ियों और परंपराओं पर चोट करने के लिए इसका उपयोग किया गया। अव्यवस्था के प्रति असंतोष तथा जन सामान्य को अपने अधिकारों के प्रति सचेत करने के लिए भी नुक्कड़ नाटकों को माध्यम बनाया गया। धीरे-धीरे नुक्कड़ नाटक कला की एक महत्वपूर्ण शैली के रूप में अपना स्थान बना चुका है।

नुक्कड़ नाटक की विशेषताएँ :-

- (१) **तात्कालिकता** : किसी भी घटना, समस्या का वर्तमान जीवन पर सीधे असर होता है। नुक्कड़ नाटक का लेखक किसी तात्कालिक ज्वलंत समस्या को लिखकर उसकी प्रस्तुति करता है ताकि उस विषय के प्रति लोगों में जागरूकता निर्माण हो।
- (२) **गतिशीलता** : नुक्कड़ नाटक के विषय का चयन करते हुए इस बात का ध्यान रखा जाता है कि इसकी प्रवाहमयी धारा में विषय, पात्र तथा दर्शक तेजी से गंतव्य की ओर बढ़ें। नाटक के अंत तक किसी को कुछ सोचने का अवकाश नहीं मिलता। इसमें कथ्य और शिल्प का फैलाव नहीं होता।
- (३) **अचूक लक्ष्य** : नुक्कड़ नाटक हथियार की तरह जड़ पारंपरिक रूढ़ियों द्वारा किए जा रहे शोषण, अनाचार को खत्म कर वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए काम करता है।
- (४) **संक्षिप्तता** : नुक्कड़ नाटक में संक्षिप्तता का तत्त्व अनिवार्य है। लंबे-लंबे संवाद या विषय का विस्तार इन नाटकों को उबाऊ बना देते हैं। नुक्कड़ नाटक जितना संक्षिप्त होगा, उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा।
- (५) **सहज भाषा और व्यंग्य शैली** : नाटककार नुक्कड़ नाटक को प्रायः सहज भाषा और व्यंग्य शैली में प्रस्तुत करता है। बीस-पच्चीस मिनट में किसी गंभीर समस्या का जनभाषा में प्रस्तुतीकरण नुक्कड़ नाटक की स्वाभाविकता और रोचकता को बढ़ाता है।

(अ) मौसम

– अरविंद गौड़

लेखक परिचय : अरविंद गौड़ जी का जन्म २ फरवरी १९६३ को शाहदरा (दिल्ली) में हुआ। दिल्ली के सरकारी स्कूल से शिक्षा पूर्ण करके आपने (इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन) इंजीनियरिंग में दाखिला लिया। वहाँ से आपका थियेटर और पत्रकारिता की ओर रुझान हो गया। थियेटर से पहले इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कार्य करने के बाद आप दिल्ली विश्वविद्यालय में कुछ समय के लिए कार्यरत रहे। मजदूरों, किसानों, आदिवासियों के साथ विविध आंदोलनों में बुनियादी भूमिका अदा करने वाले नुक्कड़ नाटककार के रूप में आप जाने जाते हैं। आपके नुक्कड़ नाटक देश-विदेश में भी मंचित हुए हैं।

प्रमुख कृतियाँ : ‘नुक्कड़ पर दस्तक’ (नुक्कड़ नाटक संग्रह), ‘अनटाइटल्ड’, ‘आई विल नॉट क्राय’, अहसास (एकल नाट्य) तथा कुछ पटकथाएँ। गौड़ जी निर्देशित नाटक ‘कोर्ट मार्शल’ का भारत में ४५० से अधिक बार मंचन।

पाठ परिचय : अरविंद गौड़ जी ने ‘मौसम’ नुक्कड़ नाटक में मानव जीवन से जुड़ी विभिन्न सामयिक समस्याओं को उजागर किया है। पानी की समस्या दिन-ब-दिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। प्रकृति से छेड़छाड़ करने के कारण ऋतुचक्र में अनियमितता आ गई है। नियत समय पर बारिश नहीं होती, होती भी है तो कहीं बहुत अधिक, कहीं बहुत कम। जल संचय नहीं हो पा रहा। जहाँ संचय है वहाँ विभिन्न उद्योगों के कारण जल प्रदूषित होता जा रहा है। प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग के कारण जल के बहाव में रुकावट आ रही है। सीवरों में कूड़े-कचरे के साथ प्लास्टिक जमा हो रहा है। प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लेखक ने इन समस्याओं का चित्रण कर सबका ध्यान इस ओर आकर्षित किया है।

इस रचना में ९ दृश्य हैं जिनके माध्यम से बारिश की अनियमितता के कारण सामाजिक जीवन पर होनेवाले परिणामों को उजागर किया है।

गीत-(१)

देख ले ओ इनसान, तूने क्या कर दिया-२

आकर तू देख ले इस नाटक में-२

क्या है तेरी जिम्मेदारी, क्या तूने की वफादारी

क्या तूने लूट लिया इस संसार से,

हो हो हो, हो हो हो, हो हो हो हो-४

देख ले ओ इनसान, तूने क्या कर दिया-२

आकर तू देख ले इस नाटक में-२

क्या है तेरी जिम्मेदारी, क्या तूने की वफादारी

क्या तूने लूट लिया इस संसार से

हो हो हो, हो हो हो, हो हो हो हो-४

दृश्य-१

आदमी-१ : यह देख !

आदमी-२ : भाई, कितना गंदा पानी है, इस पानी को पीलिया हो गया है क्या ?

आदमी-१ : यही पानी हम सबके घरों में आता है और इस पानी की वजह से मेरा यह हाल हो गया।

- आदमी-२ : यार ! तू तो गंजा हो गया एकदम !
- आदमी-१ : तेरे तो बहुत बाल हैं! तू कौन-सा पानी इस्तेमाल करता है?
- आदमी-२ : मेरे घर में भी ऐसा ही पानी आता है लेकिन हम मिनरल वॉटर का बड़ावाला जार लेते हैं ।
- आदमी-१ : वह नब्बे रुपयेवाला ?
- आदमी-२ : हाँ वही, मैं और मेरी बीवी उसी का पानी पीते हैं । उसी से नहाते हैं और जिस दिन वह जार न आए तो मेरी बीवी नहाती ही नहीं ।
- आदमी-१ : धत्-तेरे की ।
- आदमी-२ : क्या करें ? बीवी के लिए इतना तो करना ही पड़ता है ।

दृश्य-२

- आदमी-१ : भाई, अक्टूबर आ गया । अभी तक मानसून नहीं आया और ऊपर से इतनी गर्मी ।
- आदमी-२ : लगता है, प्रकृति हमसे नाराज हो गई है । खुद ही देख लो, कहीं बाढ़ आ रही है, कहीं सूखा पड़ रहा है, समझ नहीं आ रहा क्या हो रहा है ?
- आदमी-३ : भइया देखना ! दिसंबर-जनवरी में बारिश होगी, बेमौसम ।
- आदमी-४ : पूरी दुनिया में कलयुग फैल गया है कलयुग और वह भी तुम जैसे पापियों की वजह से । कूड़ा-करकट तुम फैलाओ, पोल्यूशन तुम करो, गंदगी तुम फैलाओ...
- आदमी-१ : अच्छा जी भाई साहब और जो आपकी ४-४ फैक्ट्रियाँ हैं । उनका कूड़ा-कचरा कहाँ पर जाता है ?
- आदमी-४ : वहीं, जहाँ बाकी फैक्ट्रीज का जाता है । बोलो, सभी नदियों की...
- कोरस : जय...
- आदमी-२ : बस इसलिए प्रकृति हमसे रुष्ट है ।
- आदमी-४ : आपके कहने का मतलब है कि मेरे अकेले की फैक्ट्री की वजह से प्रकृति नाराज हो गई है ?
- आदमी-३ : जी नहीं, हम सब की वजह से ।

दृश्य-३

- लड़की-१ : चलो-चलो शॉपिंग के लिए चलते हैं ।
- लड़की-२ : लेकिन आपको खरीदना क्या है ?
- लड़की-१ : मुझे चार-पाँच छाते खरीदने हैं ।
- लड़की-२ : आप छातों का क्या करोगी ? बारिश तो इस बार हुई नहीं ।
- लड़की-१ : तुमने न्यूज नहीं देखी ? कश्मीर में बाढ़ आ गई है, बादल फटने की वजह से ।
- लड़की-२ : लेकिन बाढ़ में छाते भी क्या कर लेंगे ?
- लड़की-१ : तो एक काम करते हैं, स्विमिंग कॉस्ट्यूम ले लेते हैं ।
- लड़की-२ : लेकिन मुझे स्विमिंग नहीं आती ।
- लड़की-१ : चिंता न करें ! मेरे पास टायर ट्यूब भी हैं ।

दृश्य-४

- दोस्त-१ : अपने ऑफिस में ए.सी. क्यों नहीं लगवा लेते, इतनी गर्मी हो रही है ।
- दोस्त-२ : मैंने सुना है ए.सी. से गैस निकलती है और उससे वह परत होती है ना..... ओजोन परत, उसमें छेद हो जाता है ।

दोस्त-१ : आपके एक ए.सी. की वजह से कोई छेद नहीं होने वाला। मेरे ऑफिस में छह-छह ए.सी. लगे हुए हैं। मेरी बीवी को तो सर्दी में भी ए.सी. चाहिए। ए.सी. चलाकर दो-दो कंबल ओढ़कर सोती है वह।

दृश्य-५

दोस्त-१ : चलो-चलो वॉटर पार्क चलते हैं।

दोस्त-२ : मेरी भी तो सुन लो कोई! वॉटर पार्क जाकर क्यों पैसा बर्बाद करते हो? दो दिन से लगातार बारिश हो रही है, उससे पूरा शाहदरा स्विमिंग पुल बना हुआ है, वहीं चलते हैं।

दोस्त-३ : हाँ, मिंटो ब्रिज का भी यही हाल है, पूरा डूबा हुआ है।

दोस्त-१ : एक बात बताओ। ये ५-१० मिनट की बारिश से घुटने तक पानी भर जाता है, इसकी वजह क्या है?

दोस्त-४ : वजह मैं बताता हूँ। कल जो आप मोमोज खा रहे थे, चटनी लगा-लगाकर उसकी प्लेट कहाँ फेंकी थी?

दोस्त-१ : वहीं रोड पर।

दोस्त-४ : और आप भाई साहब, दुकान से जो सामान लेते हो; उसकी प्लास्टिक थैलियाँ, खाली डिब्बे, बोतलें कहाँ फेंकते हो?

दोस्त-२ : घर के सामने नाले में।

दोस्त-१ : आपने हम दोनों को तो गिनवा दिया और खुद जो चबा रहे हो इसका पाउच कहाँ फेंकते हो? बोलो-बोलो? आप भी वही करते हो न, जो सब करते हैं?

दोस्त-४ : मैं तुम लोगों से अलग थोड़े ही हूँ, मैं भी वहीं फेंक देता हूँ, रास्ते में या नाली में।

दोस्त-२ : हाँ और यही थैली, डिब्बे और कचरा नालियों के रास्ते जाता है नालों में, सीवर में और ये कूड़ा-कचरा और प्लास्टिक उसकी निकासी रोक देते हैं। तभी तो थोड़ी-सी बारिश हुई नहीं कि पूरा शहर स्विमिंग पुल बन जाता है।

सूत्रधार

मौसम बदल रहा है। कभी बारिश होती है, कभी नहीं होती। प्रकृति से छेड़-छाड़ करके हमने पूरे ऋतुचक्र को उलट दिया है। बचपन में हम स्कूल में पढ़ते थे कि सर्दी के बाद गर्मी आती है, गर्मी के बाद बरसात आती है। लेकिन अब, सब कुछ बदल गया है। बसंत में बारिश हो जाती है, गर्मी में ओले पड़ जाते हैं और यह सब कुछ इसलिए हो रहा है क्योंकि हमने प्रकृति का दोहन किया है, उसे लूट लिया है; अपने स्वार्थ के लिए, पैसे के लिए, विकास के लिए। विकास से हमारी अवधारणा क्या है? इसी अवधारणा के चलते हम ऐसी चीजें करते हैं जिसका असर पड़ता है हाशिये पर खड़े आखिरी आदमी पर।

गीत-(२)

बंजर-सी जमीन, दूषित है हवा, पानी को भी हमने गंदा कर दिया,
बंजर-सी जमीन, दूषित है हवा, पानी को भी हमने गंदा कर दिया,
मौसम बदल रहा है, यहाँ यह हो गया,
कभी तुम कहते हो, वहाँ वह हो गया,
मौसम बदल रहा है, यहाँ यह हो गया,
कभी तुम कहते हो, वहाँ वह हो गया,

बात समझ ले, समझ ले, बात समझ ले, समझ ले
बात समझ ले, समझ ले, बात समझ ले, समझ ले !!!
जो भी होता है, तू ही तो बीज होता है, जो भी होता है
हम ही तो बीज बोते हैं ।

दृश्य-६

- एक : इतना परेशान क्यों लग रहा है ?
दो : क्या बताऊँ, खेती करने के लिए मैंने अपना घर बेच दिया । उससे जो पैसे आए उन पैसे को लेकर शहर गया और अच्छी फसल के लिए कीटनाशक दवाइयाँ लेकर आया लेकिन उससे भी कुछ फायदा नहीं हुआ । बारिश तो समय पर आती नहीं । लगता है, कहीं गलत निर्णय तो नहीं ले लिया मैंने !
तीन : सुन, ट्र्यूबवेल क्यों नहीं लगवा लेता ?
दो : ट्र्यूबवेल लगवा तो लूँ लेकिन बिजली आए तब न और पानी का स्तर भी तो कितना नीचे चला गया है ।
एक : तो क्या करेगा तू अब ? और तेरे हाथ में ये छाले कैसे पड़ गए ?
दो : मैंने सोच लिया है, मैं भी जल्दी फसल उगाने के लिए बाकी किसानों की तरह ज्यादा-से-ज्यादा कीटनाशक डालूँगा अपनी फसल में । प्रयत्न करने में क्या हर्ज है ।
तीन : पागल मत बन ! भूल गया कमलेश को ! यही सब इस्तेमाल करने की वजह से उसके हाथ जल गए थे और आर्थिक हालत भी खराब हो गई थी । कर्जा लिया, वक्त पर नहीं दे पाया तो तंग आकर उसने आत्महत्या कर ली । जरा सोच अगर तुझे कुछ हो गया तो तेरे परिवार का क्या होगा ? बच्चों का क्या होगा ?
दो : लेकिन मैं करूँ तो करूँ क्या ? कभी बाढ़ आ जाती है, कभी सूखा पड़ता है, कभी तूफान आ जाता है । अगर यह बारिश समय पर हो जाए तो हमारी आधी मुश्किलें हल हो जाएँ ।

गीत-(३)

काले मेघा ! काले मेघा ! पानी तो बरसाओ,
काले मेघा ! काले मेघा ! पानी तो बरसाओ,

दृश्य-७

- पति : आज भी, एक भी मछली नहीं फँसी ।
पत्नी : ऐसा कब तक चलेगा ? घर में एक पैसा जो नहीं है । आज भी बच्चों को सिर्फ पानी पिलाकर सुलाना पड़ा ।
पति : मैं क्या करूँ ? जब से नदी के किनारे वह प्लांट लगा है, वे प्लांट सारा जहरीला कैमिकल पानी में बहा देते हैं, जिसकी वजह से सारी मछलियाँ मर गई ।
पत्नी : तो आप नदी के दूसरे पार क्यों नहीं चले जाते ?
पति : वहाँ भी यही हाल है । वहाँ भी उद्योगों की वजह से मछलियाँ खत्म हो गई हैं और अगर किसी ने पकड़ लिया तो अलग मुसीबत । (अपने भाई से) भाई साहब, हम दोनों आपके साथ आपके गाँव चलते हैं । हम जंगल में काम कर लेंगे । कम-से-कम बच्चों को भूखा तो नहीं सुलाना पड़ेगा ।
भाई : कौन से जंगल ? कैसे जंगल ? हमने विकास के नाम पर सारे जंगल काट दिए, अब वहाँ कुछ नहीं बचा । जिन पेड़ों के सहारे हम रहते थे; वे पेड़ ही नहीं रहे, जिन जानवरों पर हम खाने, कपड़े और दूध के लिए निर्भर थे, वे जानवर नहीं रहे । हमारे खेत जला दिए, नदियाँ गंदी कर दीं । अब वहाँ कुछ नहीं बचा छोटे ! सिर्फ धुआँ है धुआँ, फैक्ट्रियों के कारखानों से निकलता हुआ धुआँ जिसने पूरे परिसर को प्रदूषित कर रखा है ।

दृश्य-८

- मजदूर : डॉक्टर साहब, कल रात से मेरी आँखों में जलन हो रही है। हाथ पर भी लाल-लाल निशान पड़ गए हैं।
- डॉक्टर : आप काम कहाँ करते हैं?
- मजदूर : यहीं पास में फैक्टरी बन रही है, मैं उसी में मजदूर हूँ।
- डॉक्टर : आपको धूप और धूल-मिट्टी की वजह से एलर्जी हो गई है। आप बाहर धूप में जाते समय चश्मा नहीं लगाते?
- मजदूर : मैं एक मजदूर हूँ डॉक्टर साहब। मैं चश्मा कहाँ से लगाऊँ?
- डॉक्टर : ये दवाइयाँ खरीद लेना और पूरी बाँह के मोटे कपड़े और चश्मा पहनकर बाहर निकलना।
- मजदूर : डॉक्टर साहब मैं मजदूर हूँ! बाहर निकलकर काम तो करना ही पड़ेगा और यह सब मैं कहाँ से लाऊँगा?
- डॉक्टर : देखिए, अगर आप यह सब नहीं करेंगे तो आपको स्किन कैंसर हो सकता है।

दृश्य-९

- आदमी-१ : अरे! सब भाग क्यों रहे हैं, क्या हो गया?
- आदमी-२ : ऊपर पहाड़ पर बादल फट गया है। नदी में भयंकर बाढ़ आ गई है। पानी सबको बहाता हुआ देखो कैसे प्रलय मचा रहा है? हम जैसे-तैसे जान बचाकर भागे और यहाँ तक पहुँचे हैं। तुम आगे मत जाना।
- महिला : मेरा घर है वहाँ पर, मुझे अपने घर जाना है।
- आदमी-३ : क्यों अपनी जान खतरे में डाल रही हो? खेत-खलिहान सब डूब चुके हैं, कुछ भी नहीं बचा वहाँ पर।
- महिला : पर मेरा बच्चा घर पर मेरा इंतजार कर रहा है! मुझे उसके पास जाना है।
- आदमी-२ : अरे आगे मत जा! अरे कोई रोको इसे!
- रिपोर्टर : जैसा कि आप देख सकते हैं, उत्तराखंड के इस जिले में बादल फटने से आई भयंकर बाढ़ से भीषण तबाही हुई है।
- महिला : मेरा बच्चा मेरा इंतजार कर रहा है! मुझे उसके पास जाने दो! मेरा बच्चा, मेरा बच्चा, मेरा बच्चा!!!
(औरत दहाड़ें मार-मारकर रोती है।)

सूत्रधार

मौसम के बदलने का लाखों लोगों की जिंदगी पर प्रभाव पड़ रहा है। मौसम का बदलता चक्र, कभी सर्दी, कभी गर्मी, कभी बरसात, कभी अकाल, कभी बाढ़, कभी सूखा, पिघलते हुए ग्लेशियर, बढ़ती हुई ग्लोबल वार्मिंग, इन सबका असर पड़ता है हम सबकी जिंदगी पर। पोल्यूशन बढ़ रहा है, जल, जमीन और जंगल लगातार दूषित होते जा रहे हैं। खेती की जमीन खत्म हो रही है, सब्जियों में कैमिकल आ रहा है, लोग बीमार पड़ रहे हैं। जिसके जिम्मेदार हम ही हैं।

हम पर्यावरण को बर्बाद कर रहे हैं, नतीजा! मौसम अपना असर दिखा रहा है। जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, केरल और समुद्र किनारे के इलाकों में, हर जगह मौसम अपना असर दिखा रहा है। अमीर आदमी, ताकतवर आदमी प्रकृति के संसाधनों का दोहन कर पर्यावरण को खतरा पहुँचा रहे हैं। मरता कौन है? किसान, गरीब, आदिवासी, साधनविहीन आदमी जिसके पास पैसा नहीं है। कभी सूखे से मरता है, कभी बाढ़ से मर जाता है तो कभी कर्ज में डूबकर मर जाता है।

प्रकृति के समीकरण बिगड़ने से पर्यावरण बर्बाद हो रहा है। कारखानों से निकलने वाला कैमिकल नदियों का पानी दूषित कर रहा है। जंगल खत्म हो रहे हैं, कार्बन डाइऑक्साइड गैस की मात्रा लगातार बढ़ रही है, ओजोन परत पर भी असर पड़ रहा है। शहरों में वाहनों की बेइंतहा तादाद भी बढ़ा दी है। नतीजा ! जहरीली गैस हमारी सेहत को बर्बाद कर रही है।

फिल्म

प्रश्न-१ : मैडम ! हमें क्यों बदनाम किया जा रहा है ? यह जहर हमने फैलाया है क्या ? पेट्रोल, डीजल यूज ना करो, कोयला यूज ना करो तो गाड़ियाँ, ट्रेनें, कारखाने कैसे चलेंगे ? और थोड़ी बहुत कार्बन डाइऑक्साइड हवा में मिल भी गई तो इससे क्या अंतर पड़ता है ?

आदमी-२ : ज्यादातर लोग यही कहते हैं कि क्या अंतर पड़ता है ? पर कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा इतनी बढ़ गई है कि ओजोन की परत खत्म हो रही है। धीरे-धीरे उसमें छेद हो रहा है। मौसम बदल रहा है, खेती बर्बाद हो रही है, जिंदगियाँ बर्बाद हो रही हैं। क्या वह असर नहीं है ? पशु-पक्षी गायब हो रहे हैं। क्या यह असर नहीं है ? हमारी हवा में, हमारे पानी में, हमारी जमीन में, हमारे शरीर में जहरीली गैस फैल रही हैं। क्या यह असर नहीं है ? यह सब कुछ जानते हुए भी हम शूतुरमुर्ग की तरह रेत में अपना मुँह गड़ाए हुए हैं।

प्रश्न-२ : खेत में अगर दवा न डालें, यूरिया न डालें, कीटनाशक न डालें, तो अच्छी फसल कैसे होगी ? अपने बीवी-बच्चों का पेट भी तो पालना है।

उत्तर : कीजिए, पर इससे आपकी जमीन बंजर हो जाएगी। वहाँ कुछ नहीं उगेगा। यूरिया डालने की वजह से सब्जियों में कैमिकल आ रहा है, लोग बीमार पड़ रहे हैं।

प्रश्न-३ : मैडम जी ! अगर बड़े-बड़े कारखाने नहीं लगाएँगे तो विकास कैसे होगा ?

उत्तर : किसने रोका है कारखाने लगाने से ? विकास करने से ? लेकिन जहाँ खेती होती है वहाँ कारखाने मत लगाओ। वहाँ कारखाने लगाओगे तो पेड़ काटोगे, जंगल कटेगा तो ग्लोबल वार्मिंग होगी।

प्रश्न-४ : हमें क्या लेना ग्लोबल वार्मिंग से ? अगर बाहर गर्मी पड़ती है तो मैं अपने घर में ए.सी. चला लूँगा। इससे कौन-सी मेरी भैंस की पूँछ उखड़ जाएगी ? और अगर उखड़ भी गई तो मैं अपनी भैंस को भी ए.सी. में बिठा लूँगा ! मुझे क्या अंतर पड़ता है ?

उत्तर : ठीक कहा, तुम्हें क्या फर्क पड़ता है ? आज नहीं पड़ता, लेकिन कल पड़ेगा। रेगिस्तान में बर्फ पड़ रही है। कुछ साल पहले यूनायटेड अरब अमीरात में बर्फ पड़ी। ठीक है ! चला लो ए.सी. लेकिन याद रखना, रहना इसी दुनिया में है, चाँद पर नहीं।

प्रश्न-५ : फलों के घर में २०-२० ए.सी. हैं तो लोगों को क्या फर्क पड़ता है ? वे अपने स्विमिंग पुल का पानी रोज बदलते हैं। उनके घर में तीन-तीन गाड़ियाँ हैं, एक उनके लिए, एक उनकी बीवी के लिए और एक उनके कुत्ते के लिए...पैसा है तो खर्च तो करेंगे ही।

उत्तर : आप ऐसा खर्च कर सकते हैं लेकिन नेचुरल रिसोर्सेस को खर्च करने का किसी को कोई हक नहीं बनता। आपके पास पैसा है, इस्तेमाल कीजिए लेकिन नेचुरल रिसोर्सेस हम सबके हैं। किसानों के हैं, गाँववालों के हैं, गरीबों के हैं, हम सबके हैं। उसे बर्बाद करने का किसी को कोई हक नहीं बनता। फर्क पड़ता है साधनविहीन लोगों को, फर्क पड़ता है उनको जिनके पास कुछ नहीं है। ज्यादातर लोग ये समझते हैं कि गैस, तेल, कोयला बहुत सारा है, कभी खत्म नहीं होगा पर गैस कितने साल चलेगी ?

कोयला कितने साल चलेगा? पेट्रोल-डीजल कितने साल चलेगा? आने वाली पीढ़ियों को हम सब मिलकर अंधे युग में धकेल रहे हैं। क्या चाहते हो? लोग पानी के लिए युद्ध करें, ऑक्सीजन के सिलेंडर साथ लेकर चलें, खाने के लिए एक-दूसरे को नोच डालें? प्रकृति से खेलकर हम बर्बाद कर रहे हैं खुद को और आने वाली पीढ़ियों को।

प्रश्न-६ : मेरी फैक्ट्री है दवाइयों की। अब मैं अपनी फैक्ट्री का वेस्ट कहाँ डालूँगी? यह समुद्र बहुत बड़ा है। वहाँ पर सब कुछ डाइल्यूट हो जाता है।

उत्तर : लाखों मछलियाँ मरती हैं, इस समुद्र के सहारे जीने वाले मछुआरे बेरोजगार हो जाते हैं, पशु-पक्षी मर रहे हैं, गायब हो रहे हैं क्योंकि हम समुद्र को प्रदूषित कर रहे हैं, पेड़-पौधों को काट रहे हैं। आपको फर्क नहीं पड़ता क्योंकि आपको कारखानों से पैसा मिलता है। उनको फर्क पड़ता है जो बेजुबान हैं, वह जानवर जो बोल नहीं सकते।

प्रश्न-७ : हाइड्रो प्लांट नहीं लगाएँगे तो बिजली कहाँ से पैदा होगी?

उत्तर : हम शोर इसलिए मचाते हैं क्योंकि आप लोग बहरे हैं। हम लोग शोर मचाते हैं उन लोगों को सुनाने के लिए जो लोग सुनना नहीं चाहते। क्यों हम सोलर प्लांट नहीं लगा सकते? सोलर प्लांट इतने महँगे क्यों हैं? वे लोगों की पहुँच से परे क्यों हैं? जितनी कीमत में न्यूक्लियर प्लांट लगता है; उतनी कीमत में हजारों विंडमिल लग सकते हैं जिससे करोड़ों लोगों को बिजली मिल सकती है। हम सब मिलकर इसे प्रोत्साहन क्यों नहीं देते? इसपर रिसर्च क्यों नहीं करते? जिस तेजी से क्लाइमेट चेंज हो रहा है; क्या इसपर रिसर्च की जरूरत नहीं है? उसके लिए एक्शन लेना क्या हम सबकी जिम्मेदारी नहीं है? श्रीनगर में जो हुआ, उत्तराखंड, तमिलनाडु, केरल, भोपाल गैस कांड में जो हुआ, क्या यह सब चेतावनी नहीं है कि अब भी सँभल जाओ, अगली बारी तुम्हारी है। जिसे हम आज बर्बाद कर रहे हैं, जल्द ही वह हमारी पूरी सभ्यता को भी बर्बाद कर सकता है। वक्त है सँभलने का, सोचने का, एक्शन लेने का।

अरे ! रुक जा रे बंदे,

अरे ! थम जा रे बंदे,

कि प्रकृति हँस पड़ेगी।

— ० —

नुक्कड नाटक के कुछ विषय

- | | |
|-----------------------|--|
| (१) दहेज प्रथा | (७) स्वच्छता अभियान |
| (२) कन्या भ्रूण हत्या | (८) युवकों में बढ़ती असुरक्षा की भावना |
| (३) पर्यावरण रक्षण | (९) शरीर चंगा तो मन चंगा |
| (४) महिला सशक्तीकरण | (१०) मोबाइल के दुष्प्रभाव |
| (५) जल संवर्धन | (११) मानसिक स्वास्थ्य |
| (६) व्यसन मुक्ति | (१२) सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव |

(आ) अनमोल जिंदगी

– अरविंद गौड़

पाठ परिचय : ‘अनमोल जिंदगी’ नुक्कड़ नाटक में लेखक ने रक्तदान के संदर्भ में हमारी गलत धारणाओं पर भाष्य किया है। हजारों-लाखों लोगों की समय पर खून न मिलने के कारण मृत्यु हो रही है। दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों या रुग्णों को समय पर खून उपलब्ध न होने के कारण उनकी स्थिति गंभीर हो जाती है। ऐसे रोगियों की मृत्यु के बाद रह जाते हैं रोते-बिलखते माँ-बाप, यतीम बच्चे और उनकी विधवा औरतें। इस सामाजिक समस्या से उबरने के लिए लेखक ने रक्तदान के महत्त्व को समझाया है। नियमित रक्तदान से रक्त की माँग के अनुसार रक्त उपलब्ध होगा और हमारी धमनियों में भी शुद्ध रक्त प्रवाहित होगा। अतः रक्तदान करें।

गीत-(१)

सुन ले जरा तू, सुन जरा-४
हर बूँद-बूँद में जिंदगी, हर बूँद से चलती जिंदगी-२
सुन ले जरा तू, सुन जरा-२
हर साँस में रहती जिंदगी, अहसास में रहती जिंदगी-२
सुन ले जरा तू, सुन जरा-४

१

कोरस : ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग-३
अभिनेता-१ : हैलो! क्या हुआ...? क्या चाचा का एक्सीडेंट हो गया...?
ओ निगेटिव ब्लड की जरूरत है। चलो, मैं देखता हूँ शायद कहीं मिल जाए...!
अभिनेता-२ : क्या हुआ...?
अभिनेता-१ : यार, मेरे चाचा का एक्सीडेंट हो गया है। ओ निगेटिव ब्लड की जरूरत है। तुम्हारा तो ओ निगेटिव है।
दे दो...।
अभिनेता-२ : नहीं यार, मैंने १ महीने पहले ही टैटू बनवाया था।
अभिनेता-१ : झूठ क्यों बोलता है? तूने टैटू १ साल पहले बनवाया था।
अभिनेता-३ : क्या हुआ भैया...?
अभिनेता-१ : ओ निगेटिव ब्लड चाहिए।
अभिनेता-३ : मिल जाएगा लेकिन थोड़ी मुश्किल होगी... पैसे थोड़े ज्यादा लगेंगे।
अभिनेता-१ : आप पैसे की चिंता मत करो, बस! खून का इंतजाम कर दो।
अभिनेता-३ : एक बात याद रखना, हॉस्पिटल में कह देना कि ब्लड देने वाला मेरे चाचा के मामा का भाई है...
मेरा नाम नहीं आना चाहिए। समझ गया न।

२

कोरस : ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग
अभिनेता-४ : हैलो! हाँ मामी। क्या कहा? मामा जी को डेंग्यू हो गया है? प्लेटलेट्स चाहिए? मामी! मुझे तो बॉस ने बुलाया है, आज जरूरी मीटिंग है, मैं नहीं आ पाऊँगा। अभी फेसबुक और ट्विटर पर पोस्ट कर दूँगा। टेंशन मत लो। कोई पढ़ लेगा और ब्लड डोनेट कर देगा...!

- कोरस : ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग ट्रिंग
- अभिनेता-५ : यह क्या कर रहा है... ?
- अभिनेता-६ : यार, इन कंपनीवालों ने परेशान कर रखा है। ब्लड डोनेशन के मैसेज कर-कर के, उन्हीं को री-ट्वीट कर रहा हूँ। काम का काम, टाइम पास का टाइम पास।
- अभिनेता-५ : इससे क्या होगा... ?
- अभिनेता-६ : सोशल वर्क और क्या... ?
- अभिनेता-५ : सोशल वर्क करने का इतना ही शौक है तो खुद ब्लड डोनेट करने क्यों नहीं चला जाता।
- अभिनेता-६ : अगर मैं ब्लड डोनेट करने जाऊँगा तो यह सोशल वर्क कौन करेगा... ?

सूत्रधार

हमारे देश में ब्लड की रोजाना बहुत जरूरत पड़ती है। सड़कों पर एक्सीडेंट के बाद, हॉस्पिटल में ऑपरेशन के दौरान, और डेंग्यू, मलेरिया जैसी कई तरह की गंभीर बीमारियों में ब्लड की सख्त जरूरत पड़ती है। मरीज के रिश्तेदार ब्लड के लिए यहाँ-वहाँ दौड़ते भागते हैं, पर वक्त पर ब्लड का मिलना बहुत मुश्किल होता है। हिंदुस्तान में हर एक घंटे में प्रसव के दौरान तीन मौतें होती हैं, इसका सबसे बड़ा कारण है वक्त पर खून का ना मिलना!

ऑपरेशन के दौरान खून की सबसे ज्यादा जरूरत पड़ती है। क्या ये जरूरतें पूरी हो पाती हैं? क्या ये जरूरतें ब्लड बैंक पूरी कर पा रही हैं? हमारे समाज में रक्तदान करने वाले लोग कम क्यों हैं? क्या ब्लड डोनेट करना सिर्फ आर्मी, सीआरपीएफ के जवानों और कॉलेज के स्टूडेंट्स का ही काम है...? हमारे समाज में ब्लड ना देने के बहुत-से विचित्र कारण होते हैं।

कट-टू-कट्स

- अभिनेता-१ : बीमारी, एचआईवी, ब्लड कैंसर... ना बाबा ना, मैं खून नहीं दूँगा...!
- अभिनेता-२ : (पुशअप्स मारते हुए) इतनी मुश्किल से तो जिम में जाकर बॉडी बनाई है, अब खून दे दूँगा तो मेरी बॉडी कम नहीं हो जाएगी...!
- अभिनेता-३ : हम खानदानी लोग हैं, हमारी रगों में शाही खून दौड़ता है। अब ऐसे कैसे किसी ऐसे-गैरे नत्थू खैरे को दे दें अपना खानदानी खून...!
- अभिनेता-४ : मैं खून दूँगा तो मुझे कौन देगा रे!
- अभिनेता-५ : तू तो लड़की है। तेरा हिमोग्लोबिन तो पहले से ही कम है, तू कैसे खून दे सकती है?
- अभिनेता-६ : मैं खून देता नहीं, मैं खून लेता हूँ!
- लम्बा अभिनेता-७ : मैं खून दूँगा तो मेरी हाइट रुक नहीं जाएगी ?
- कोरस : और कितना लंबा होगा रे... ?
- अभिनेता-८ : मुझे तो ब्लड देखकर ही चक्कर आते हैं!
- अभिनेता-९ : मुझे तो सुई से डर लगता है!
- अभिनेता-१० : रे-रे, मैं भी खून देवाँगा।
- कोरस : बैठ जा... मेरा पुत्तर पहले ही इन्ना कमजोर होगा... खून देगा ते होर कमजोर नहीं हो जाएगा ?

सूत्रधार

हम लोग रक्तदान को अपनी जिंदगी का हिस्सा क्यों नहीं बनाते? जिस तरह से हम खाना खाते हैं, पानी पीते हैं, कपड़े बदलते हैं, अपने रोजमर्रा के काम करते हैं, उसी तरह से हम हर ३ महीने में रक्तदान भी तो कर ही सकते हैं। हम क्यों नहीं इसे अपनी आदत बनाते हैं...?

रक्तदान ना करने के बहुत सारे कारण हैं, पर रक्तदान करने का सिर्फ और सिर्फ एक कारण है, किसी की जिंदगी बचाना। भला इससे ज्यादा नेक और कौन-सा काम होगा।

गीत-(२)

कोई कहे कहता रहे, रक्तदान ना करना...

कोई कहे कहता रहे, रक्तदान ना करना...

हम लोगों ने रक्तदान करना है ठाना हे हे हे...

हम लोगों ने रक्तदान करना है ठाना...

दृश्य-१

अभिनेता-१ : भैया, हमारे यहाँ ब्लड डोनेशन कैंप लगा है। चलो, रक्तदान करके आते हैं।

अभिनेता-२ : मैं ब्लड देने जाऊँगा तो यह बाइक पर स्टंट कौन मारेगा...?

चल जा, खुद मरेगा और मुझे भी मरवाएगा।

गीत-(३)

ओ गड्डी ! जरा रास्ता दे

ओ बाबू, जरा हो बाजू

ओ जाम लगा है देखो पों पों पों

ओ गड्डी, मत तेज भगा

ओ बाबू, जरा धीरे चला

ओ जाम लगा है देखो पों पों पों

ओ गड्डी, चल दी धुआँ ओ छड़ दी

ओ गड्डी, चल दी रोक लगा दी

मैनुं सबसे आगे जाना है

यारों पर रौब जमाना है

एक्सीडेंट

अभिनेता-३ : हेल्प... हेल्प, अरे कोई मदद करो... इसे क्या हो गया...? कितना खून बह रहा है...! भैया, इसे हॉस्पिटल ले जाते हैं... जल्दी करो।

अभिनेता-४ : पागल हो गया है क्या? देखता नहीं ! सड़क पर कितना खून फैला हुआ है, यह तो यहीं मर जाएगा। चलो चलें... यहाँ खड़े रहें तो पुलिस का चक्कर पड़ जाएगा।

गीत-(४)

रक्त से जुड़ता जब ये रक्त का नाता है

जीवन मिले तो देख परिजन मुस्काता है

मत छोड़ो उसे रस्ते में जिसे तुम्हारी जरूरत है

कि इनसान वही जो इनसान के काम आता है।

सूत्रधार

हमारे पास घूमने-फिरने के लिए टाइम है, फिल्म देखने के लिए टाइम है लेकिन ब्लड डोनेट करने के लिए टाइम नहीं है! क्योंकि जागरूकता का अभाव है! अगर हम लोग दूसरों की जरूरत को अपनी जरूरत नहीं समझेंगे ...अगर हम दूसरों की इमरजेंसी में खड़े नहीं होंगे तो हमारी इमरजेंसी में कौन खड़ा होगा... ?

अगर मेरे पड़ोस में किसी को ब्लड की जरूरत है और उस वक्त मैं उनकी मदद नहीं करता तो क्या वे मेरी मदद करेंगे... ? कौन-से मिथक हैं... ? रक्तदान के बारे में कौन-सी गलतफहमियाँ हैं, कौन-सी बातें हैं कि लोग मदद के लिए आगे नहीं आते ?

दृश्य-२ (हॉस्पिटल दृश्य)

- कंपाउंडर** : पैर साइड कर, यह सरकारी अस्पताल है तुम्हारे घर का बेड नहीं...! इसके बाजू कौन ऊपर करेगा... ? मैं...! जल्दी कर...
- डॉक्टर** : आपके बेटे को खून की जरूरत है, जल्द-से-जल्द कहीं से इंतजाम कीजिए...
- माँ** : डॉक्टर साहब, आप मेरा खून ले लो ।
- बहन** : डॉक्टर साहब, आप मेरा खून ले लीजिए ।
- डॉक्टर** : जी नहीं, हम बच्ची का खून नहीं ले सकते और माता जी आप पहले ही ब्लड डोनेट कर चुकी हैं, आप कहीं और से इंतजाम कीजिए ।
- माँ** : डॉक्टर साहब हर जगह कोशिश कर ली, कहीं नहीं मिल रहा है...
- कंपाउंडर** : तो आप खरीद क्यों नहीं लेतीं... ?
- माँ** : कहाँ से खरीदें भाई साहब ? लोगों के घर जाकर झाड़ू-बर्तन करती हूँ । उससे जो पैसे आते हैं; इसकी दवाई में खर्च हो जाते हैं और जो बचता है, उसमें से स्कूल की फीस जाती है और बाकी बचता क्या है ? हम खाएँ क्या ? पहनें क्या ? भाई साहब ! अब आप ही कुछ मदद कीजिए, आप ही हमारा आखिरी सहारा है, आप ही कुछ कीजिए ।
- कंपाउंडर** : पता भी है, एक खून की बोतल की कीमत क्या है ? मैं कहाँ से इंतजाम करूँ... ?
- माँ** : भैया देखिए ना ! मेरे बेटे को क्या हो गया... ? यह साँस नहीं ले रहा... डॉक्टर साहब को बुलाइए ।
- बहन** : माँ, भैया को क्या हो रहा है ? डॉक्टर साहब... डॉक्टर साहब... देखिए भैया साँस नहीं...
- डॉक्टर** : आई एम सॉरी...! आपका बेटा...
(माँ दहाड़ें मारकर रोती है ।)
- कोरस** : मैं सच बोलूँ तो पानी चाहिए,
बूँदें बेमानी चाहिए
इंसाँ समंदर अपना खोल दो
मैं सच बोलूँ तो पानी चाहिए,
(आलाप)

हो हो हो हो हो हो हो हो हो हो हो हो हो हो हो हो हो-२

सूत्रधार

हजारों-लाखों लोग समय पर खून न मिलने की वजह से मरते हैं और पीछे रह जाते हैं, रोते-बिलखते माँ-बाप, यतीम बच्चे और विधवा औरतें। ब्लड की माँग और आपूर्ति में इतना अंतर क्यों है? आज भी ब्लड की जितनी जरूरत होती है, उसका सिर्फ ९ से १०% ही ब्लड मिल पाता है। हम ब्लड की जरूरत को क्यों नहीं समझते? अगर हम खून के महत्त्व को समझेंगे तो शायद हम खुद जाकर ब्लड डोनेट करेंगे और दूसरों को प्रोत्साहित भी करेंगे।

गीत-(५)

हाथ खाली हैं हमारे, जेब भी खाली-खाली है।
अपनी जिंदगी हमने, इन गलियों में ही पाली है।
कर सके गर भला किसी का तो खुद को इनसान कहे
वरना सारे रिश्ते-नाते, बस, इक खामख्याली है।

दृश्य-३ (ऑटो)

- ऑटो चालक-१ : भाई साहब आपको जाना कहाँ है? कभी यहाँ, कभी वहाँ, वहाँ से यहाँ, फिर यहाँ से वहाँ, पूरी दिल्ली के दर्शन करा दिए आपने, आपको जाना कहाँ है? लो, मैंने ऑटो स्टैंड पर गाड़ी रोक दी, आखिर आप चाहते क्या हैं?
- ऑटो चालक-२ : यार ! बुरा मत मानना। लगता है, इसकी नई-नई शादी हुई है और आज इसने बीवी को रामलीला दिखाने जाने का वादा किया होगा, यह वक्त पर नहीं पहुँचा तो इसका लंका दहन हो जाएगा।
- ऑटो चालक-१ : कुछ बोलेंगे भी क्या हुआ?
- आदमी : मेरी माँ की तबीयत खराब है। उन्हें खून की सख्त जरूरत है। हर जगह खून के लिए भटक रहा हूँ लेकिन कहीं नहीं मिल रहा।
- ऑटो चालक-२ : आप तो ठीक-ठाक काम-धंधेवाले लगते हो, ब्लड खरीद क्यों नहीं लेते?
- आदमी : कहाँ से खरीदें? जितना पैसा था, वह हम पहले ही लगा चुके हैं। जिन लोगों की हमने मदद की, उन लोगों ने भी मुँह मोड़ लिया।
- ऑटो चालक-१ : साहब, मैं दूँगा खून... चलिए! कहाँ जाना है...
- ऑटो चालक-२ : अरे पागल है क्या...? तू देगा खून...?
- ऑटो चालक-१ : क्यों नहीं दे सकता खून? माना कि मैं गरीब हूँ, एक ऑटो ड्राइवर हूँ तो क्या मैं खून नहीं दे सकता?
- आदमी : भाई साहब, मैं आपका अहसान कैसे भूलूँगा, मदद करना तो कोई आपसे सीखे। जब हमारे अपनों ने मुँह मोड़ लिया तब पराये होकर भी आप हमारी मदद कर रहे हैं, आपका शुक्रिया...!

गीत-(६)

बूँद-बूँद मिलने से, बनता एक दरिया है
बूँद-बूँद सागर है वरना यह सागर क्या है
समझो इस पहेली को, बूँद हो अकेली तो
एक बूँद जैसे कुछ भी नहीं,
हम औरों को छोड़ें तो, मुँह सबसे ही मोड़ें तो
तनहा रह ना जाएँ देखो हम भी कहीं
क्यों ना बहाएँ मिलकर हम धारा!

सूत्रधार

ब्लड डोनेशन का मतलब किसी की जिंदगी को बचाना है। जितनी जरूरत किसी की जान बचाने के लिए ऑक्सीजन की है, उतनी ही जरूरत वक्त आने पर रक्त की भी होती है। अगर आप किसी को नई जिंदगी देना चाहते हैं तो समय पर रक्तदान करें। रक्तदान सिर्फ दान नहीं, जीवन का दान है।

स्टोरीज

अभिनेता-१ : मैं एक एथलीट हूँ। चार महीने पहले मैंने एक कैंसर पीड़ित तीन साल की बच्ची को रक्तदान किया। यकीन मानिए, उस वक्त जो खुशी और सुकून मुझे मिला, वह मेरे किसी भी अचीवमेंट और मेडल से बढ़कर है।

स्त्री अभिनेत्री : जब हमारे यहाँ ब्लड डोनेशन कैंप लगा था तो मैंने अपने पति के सम्मुख ब्लड डोनेट करने की इच्छा जाहिर की। शुरुआत में वे इतने सपोर्टिव नहीं थे लेकिन मैंने उन्हें समझाया। मैंने रक्तदान किया, मन को अच्छा लगा। जब पिछले महीने मेरे पति को डेंग्यू हुआ। उन्हें खून की जरूरत पड़ी, उस वक्त मेरा ही डोनर कार्ड उनके काम आया।

सूत्रधार

जब भी हमारे आस-पास ब्लड डोनेशन कैंप लगता है या ब्लड डोनेशन की बात आती है तो हम बहाने बनाते हैं, डरते हैं। क्या यही डर हमारी जिंदगी की उम्मीदों की रीढ़ को नहीं तोड़ रहा...? क्या हमें आगे बढ़कर इंसानियत के लिए, जिंदगी के लिए दूसरों की मदद नहीं करनी चाहिए...?

अभिनेता-१ : रीढ़ को सीधा करो

अभिनेता-२ : आँख से देखा करो

अभिनेता-३ : सुनने की आदत को बदलो

अभिनेता-२ : मुँह से कुछ बोला करो

गीत-(७)

रीढ़ को सीधा करो, आँख से देखा करो
सुनने की आदत को बदलो, मुँह से कुछ बोला करो
रीढ़ को सीधा करो, आँख से देखा करो
सुनने की आदत को बदलो, मुँह से कुछ बोला करो
सब तुम्हारे बस में है, सब हमारी हद में है
कुछ नहीं जो कल में है, जिंदगी पल-पल में है
उजले दिन की चाह में, आज ना मैला करो
हर तरफ दीवार है, मुश्किलें-ही-मुश्किलें
अपने हिस्से आई है, बस कोशिश-ही-कोशिश
जिस तरफ नजरें घुमाओ, साजिशें-ही-साजिशें
दफन हैं भीतर हमारे, ख्वाहिशें-ही-ख्वाहिशें
हक ना झोली में गिरेगा, माददा पैदा करो
रीढ़ को सीधा करो, आँख से देखा करो
सुनने की आदत को बदलो, मुँह से कुछ बोला करो।

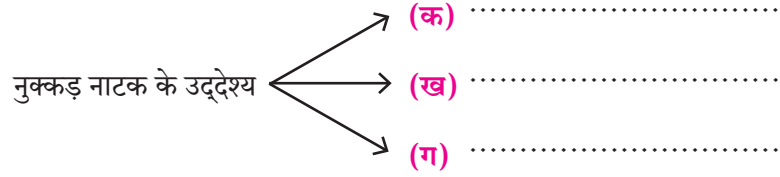
(समाप्त)

— ० —

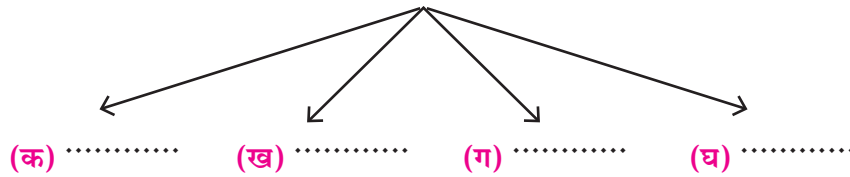
विधा पर आधारित

१. (अ) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए -

(१) लिखिए



(२) नुक्कड़ नाटक के विषय



(३) नुक्कड़ नाटक के उपयोग

- (क)
- (ख)
- (ग)

(४) नुक्कड़ नाटक की विशेषताएँ तथा स्पष्टीकरण

- (क) विशेषता :
- स्पष्टीकरण :
- (ख) विशेषता :
- स्पष्टीकरण :
- (ग) विशेषता :
- स्पष्टीकरण :
- (घ) विशेषता :
- स्पष्टीकरण :
- (च) विशेषता :
- स्पष्टीकरण :
- (छ) विशेषता :
- स्पष्टीकरण :

नाटक पर आधारित

आकलन

(आ) सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए -

(१) कारण लिखिए

(क) किसान ट्र्यूबवेल नहीं लगा पाता

(१)

(२)

(ख) पूरा शहर स्विमिंग पुल बन जाता है

(१)

(२)

(२) लिखिए -

(क) कीटनाशकों के परिणाम



(ख) विकास के नाम पर किया गया

(१) प्रकृति का -

(२) जमीन को -

(३) हवा को -

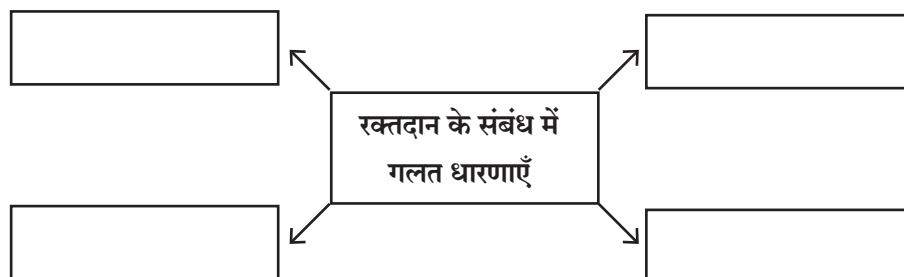
(ग) ए.सी. से निकलने वाली गैस से यह होता है

(३) उत्तर लिखिए

(क) माँ अपने बेटे के लिए खून नहीं खरीद सकी

(१) (२)

(ख) संजाल पूर्ण कीजिए



अभिव्यक्ति

- (१) बंजर होती जा रही खेती को बचाने के उपाय अपने शब्दों में लिखिए ।
- (२) 'जल संवर्धन आज की आवश्यकता' इस विषय पर अपने विचार लिखिए ।
- (३) 'ब्लड बैंक समय की माँग' इस विषय पर स्वमत लिखिए ।
- (४) 'रक्त की कालाबाजारी : एक अभिशाप' अपना मत लिखिए ।

लघूत्तरी

- (१) 'मौसम' नुक्कड़ नाटक में वर्णित समस्याओं पर प्रकाश डालिए ।
- (२) 'विकास का सीधा असर पड़ता है लोगों की जिंदगी पर', इस कथन को स्पष्ट कीजिए ।
- (३) 'रक्तदान करना हमारा उत्तरदायित्व है', नाटक के आधार पर लिखिए ।
- (४) 'रक्तदान के लिए सामाजिक जागृति की आवश्यकता', नाटक के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

